E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

निरुक्त और व्याकरण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

यास्क ने निरुक्त को कहा है कि यह विद्यास्थान है, व्याकरण का पूरक है-"तदिदं विद्यास्थानं, व्याकरणस्य कार्त्स्यनम्"। वेदों के समुचित अध्ययन के लिए भी दोनों की समान आवश्यकता है क्योंकि दोनों वेदाङ्ग हैं। इस साहचर्य के कारण उनमें घनिष्ठ सम्बन्ध का होना अनिवार्य है। वे एक दूसरे के पूरक हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे साङ्ख्य और योग, आगमन और निगमन तर्कशास्त्र।

व्याकरण शब्दों की शुद्धाशुद्धि का विचार करता है और शब्द-रचना के लिये प्रकृत्ति-प्रत्यय का विभाजन करता है जैसा कि तैत्तिरीय संहिता के इस वाक्य से मालूम होता है– "वाग्वै पराची अव्याकृता अवदत् ते देवा इन्द्रमब्रुवन्- 'इमां मो वाचं व्याकुर्विति.....तामिन्द्रो मध्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत्। तस्मादियं व्याकृता वागुद्यते'। पुनः शब्दों के भेद, लिङ्ग, वचन, कारक का विचार भी व्याकरण ही करता है। ये सभी शब्द के बहिरङ्ग हैं। पतञ्जलि ने व्याकरण (शब्दानुशासन), के प्रयोजनों में वेदों की रक्षा, ऊह (विचार), आगम (वेदाध्ययन), शब्दाधिकार में लघुता और असन्देह को मुख्य माना है।

आपाततः निरुक्त के भी ऐसे ही काम हैं किन्तु वह एक डग और आगे बढ़कर अर्थानुशासन भी करता है। व्याकरण जब शब्दों की शुद्धता की जांच शिष्ट प्रयोग (निपातनों में) और प्रकृति-प्रत्यय के द्वारा कर लेता है तब निरुक्त ही उसके अर्थ की ओर संकेत करता है। भाषा में शब्द यदि बहिरङ्ग है तो अर्थ अन्तरङ्ग। निरुक्त सभी शब्दों में धातु की कल्पना करके मूल से लेकर वर्तमान अर्थ तक को ढूंढने की चेष्टा करता है। चूंकि शब्द और अर्थ में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है इसलिए व्याकरण और निरुक्त भी परस्पर आश्रित हैं।

व्याकरण अपनी प्रकृति की शुद्धता और अर्थ की जांच के लिए निरुक्त पर निर्भर करता है। सच यह कि अर्थ का ज्ञान निरुक्त के बिना नहीं हो सकता। धातुपाठ के सभी अर्थ निरुक्त की ही कृपा से हैं। दूसरी ओर निरुक्त उन धातुओं के लिए व्याकरण की ही सहायता लेता है परन्तु प्रत्ययों की आवश्यकता इसे नहीं। वैसे कहीं-कहीं स्पष्टीकरण के लिए दे दें, यह दूसरी बात है। इतना होने पर भी निरुक्तकार यास्क व्याकरण को सर्वस्व नहीं मान लेते जैसा कि वे कहते हैं– 'न संस्कारमाद्रियेत। विशयवत्यो हि वृत्तयो भवन्ति'। व्याकरण के रूप बड़े संशयात्मक होते हैं इसलिए कई स्थानों पर उन्होंने व्याकरण के धातुओं का उल्लंघन किया है।

यास्क के समय वैयाकरणों का एक पुष्ट सम्प्रदाय था- यह उनके उद्धरणों से स्पष्ट होता है। निरुक्तकार स्वयं भी कई वैयाकरणों के नाम देते हैं, जैसे-शाकटायन, गार्ग्य, गालव, शाकल्य। इनके नाम पाणिनि ने भी अष्टाध्यायी में दिये हैं। यदि वे दूसरे व्यक्ति नहीं हैं तो सचमुच ये आचार्य अत्यन्त प्राचीन हैं। इन सभी वैयाकरणों तथा अन्य आचार्यों का पूरा उपयोग निरुक्त में किया गया है। इनके पारिभाषिक शब्द निरुक्त में प्रचुरता से मिलते हैं। कुछ शब्द तो प्रातिशाख्यों (शिक्षाग्रन्थों) से भी लिये गये हैं, जैसे- संहिता, स्वर आदि। पाणिनि ने यास्क के कुछ शब्दों को परिवर्तन के साथ दिया है।

व्याकरण के पद-भेद यास्क ने भी लिये हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात। पीछे चलकर पाणिनि केवल दो ही भेद रखते हैं- सुबन्त और तिङन्त। निरुक्त में व्याकरण के पारिभाषिक शब्द बहुत-से पड़े हुए हैं, जिन पर स्वतन्त्र रूप से अलग-अलग विचार करना एक ग्रन्थ का विषय है।

व्याकरण के कुछ शब्दों का तो उन्होंने निर्वचन तक दिया है, जिससे डा० बेलवलकर- जैसे कुछ विद्वान् निष्कर्ष निकालते हैं कि इन शब्दों को वे पारिभाषिक नहीं मानते होंगे, जैसे 'सर्वनाम' का निर्वचन है 'सर्वाणि नामानि यस्य, सर्वेषु भूतेषु नमति = गच्छति वा', किन्तु निर्वचन की धुन तो यास्क में है ही। 'निपात' को भी तो वे 'उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति' कहते हैं। फिर चार पद-भेद कहने का क्या अभिप्राय है? याद सर्वनाम को पारिभाषिक शब्द नहीं मानते तो 'त्व इति सर्वनाम अनुदात्तम्' क्यों कहते! यह स्थान स्पष्ट करता है कि सर्वनाम कुछ खास शब्दों का संग्रह है जैसा पाणिनि भी मानते हैं।

जिस प्रकार यास्क ने व्याकरण की शब्दावली का प्रयोग किया है, उसी प्रकार पतञ्जलि ने भी महाभाष्य में निरुक्त की सामग्री का खुलकर उपयोग किया है और कई स्थानों पर उनके वाक्य ज्यों-के-त्यों उद्धृत किये हैं। कुछ उदाहरण लें– षड् भावविकारा भवन्ति इत्याह भगवान् वार्ष्यायणिः, उतत्वः पश्यन्न०, नाम खल्वपि धातुजम्- एवमामाहुर्नैरुक्ताः, शवतिर्गतिकर्मा कम्बोजेष्वेव भाषितो भवति, सक्तुमिव तितउना पुनन्तो०, चत्वारि शृङ्गा त्रयो०, चत्वारि वाक्परिमिता पदानि।

अतएव निरुक्त और व्याकरण में घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। दोनों एक दूसरे पूरक हैं। निरुक्त का सर्वप्रथम उल्लेख अपने वर्तमान अर्थ में छान्दोग्योपनिषद् (सप्तम अध्याय) में मिलता है तथा छह वेदाङ्गों के नाम हमें मुण्डकोपनिषद् में मिलते हैं। फिर भी कालक्रम की दृष्टि से व्याकरण निरुक्त की अपेक्षा प्राचीनतर है, क्योंकि निरुक्त की व्युत्पत्तियों का स्रोत व्याकरण ही है, जिसकी पूर्व स्थिति आवश्यक है।

उपसर्गों के विषय में भी दो पक्षों- शाकटायन और गार्ग्य का समन्वय यास्क ने अच्छी तरह किया है। शाकटायन का मत है कि उपसर्ग का अकेले कोई अर्थ नहीं (अर्थात् ये वाचक नहीं हैं), वे केवल चिह्नमात्र हैं तथा क्रिया और संज्ञा में जुटकर उन्हीं के छिपे हुए अर्थ का प्रकाशन कर देते हैं। दूसरी ओर गार्ग्य का मत है कि उपसर्ग वाचक हैं, अपना अर्थ रखते हैं तथा संज्ञा या क्रिया से मिलकर उनके अर्थ में विकार ला देते हैं। यास्क शाकटायन के मत का उल्लेख करके गार्ग्य के पक्ष में भी उपसर्गों का अर्थ देते हैं, किस प्रकार का परिवर्तन कौन उपसर्ग करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि निरुक्त व्याकरण का पूरक तो है ही, साथ-ही साथ व्याकरण के नियम भी इसमें समुचित स्थान पाते हैं। वस्तुतः दोनों सापेक्ष हैं, निरपेक्ष नहीं। व्याकरण सम्बन्धी यास्क के निम्नोक्त विचार विशेष रूप से ध्यातव्य हैं-

(क) शब्दार्थ-सम्बन्ध की प्रक्रिया पर यास्क ने सर्वप्रथम विचार किया है कि शब्द अत्यन्त व्यापक होते हैं, सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को भी प्रकट कर सकते हैं, इसीलिए अर्थों के बोध के लिए वे नित्य रूप से सम्बद्ध हैं। व्याकरण के 'स्फोट' दर्शन की यह भूमिका है।

(ख) यास्क ने पदों को चार भागों में विभक्त किया है नाम, आख्यात उपसर्ग और निपात। अन्तिम दोनों में प्रतिपद-पाठ करके पाणिनि के समान ही इनके लक्षणों की असम्भाव्यता प्रकट की गयी है।

(ग) नाम तथा आख्यात के विषय में यास्क के द्वारा प्रकट किये गये विचार व्याकरण-दर्शन-सम्बन्धी सभी परवर्ती ग्रन्थों में संकेतित हैं। विशेषतः क्रिया पर कोई भी प्रकरण यास्क के विचारों से ही उपक्रान्त होता है।

(घ) सभी नामों को जो यास्क ने आख्यातज माना है उसे यद्यपि पाणिनि के द्वारा मान्यता नहीं मिली किन्तु पाणिनीय सम्प्रदाय में वह सर्वग्राह्य मत हो गया। उणादि-सूत्रों की सम्पूर्ण प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में यह आख्यातज सिद्धान्त है।

(ङ) व्याकरण-शास्त्र में प्रयुक्त विविध शास्त्रीय शब्दों का यास्क ने अव्याहत प्रयोग किया है। अधिकांश शब्द पाणिनि-व्याकरण में प्रयुक्त नहीं हैं, किन्तु व्याकरणशास्त्रीय शब्दों के ऐतिहासिक अध्ययन के लिए ये पुष्कल सामग्री देते हैं।